

पाठ 5: मैं क्यों लिखता हूँ? (अज्ञेय)

1. लेखक परिचय

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' प्रयोगवाद और नई कविता के प्रवर्तक हैं। यह पाठ उनका एक विचारात्मक निबंध है, जिसमें उन्होंने लेखन की मूल प्रेरणा पर गंभीर विचार किया है।

2. विस्तृत सारांश

लेखन का मूल कारण: अज्ञेय जी के अनुसार कोई भी सच्चा लेखक प्रसिद्धि, पैसे या बाहरी दबाव (संपादकों की माँग) के कारण अच्छी रचना नहीं कर सकता। एक लेखक मुख्य रूप से अपनी '**आभ्यंतर विवशता**' (**Internal Compulsion**) के कारण लिखता है। जब तक वह अपनी भीतरी पीड़ा और छटपटाहट को शब्दों में व्यक्त नहीं कर देता, तब तक उसे शांति नहीं मिलती।

अनुभव बनाम अनुभूति: लेखक स्पष्ट करते हैं कि 'अनुभव' (Experience) वह होता है जो हम अपनी आँखों से देखते हैं। लेकिन केवल अनुभव से साहित्य नहीं रचा जा सकता। जब वह अनुभव हमारी संवेदना (Feeling) का हिस्सा बनकर हमारी 'अनुभूति' (Internal pain/realization) बन जाता है, तभी एक सच्ची कविता जन्म लेती है।

हिरोशिमा का उदाहरण: लेखक जब जापान गए तो उन्होंने हिरोशिमा में रेडियोधर्मी प्रभाव से पीड़ित लोगों को देखा (यह अनुभव था), लेकिन वे लिख नहीं पाए। बाद में एक दिन जब वे हिरोशिमा की सड़क पर घूम रहे थे, तो उन्होंने एक पत्थर पर एक व्यक्ति की काली 'छाया' देखी जो परमाणु बम के विस्फोट में भाप बनकर उड़ गया होगा। उस छाया को देखकर वह भयानक दृश्य लेखक के मन में जीवंत हो उठा और उन्हें लगा कि वे स्वयं उस पीड़ा को भोग रहे हैं (यह अनुभूति थी)। उसी 'आत्मानुभूति' के कारण भारत लौटकर उन्होंने ट्रेन में बैठे-बैठे 'हिरोशिमा' नामक प्रसिद्ध कविता लिखी।

3. पाठ का मूल भाव

इस निबंध का मूल भाव यह है कि **रचनात्मक साहित्य केवल बाहरी अनुभवों से नहीं, बल्कि गहरी 'आत्मानुभूति' (भीतरी पीड़ा) से पैदा होता है।** एक सच्चा साहित्यकार तब तक कुछ नहीं लिख सकता, जब तक वह किसी घटना को पूरी तरह से अपनी आत्मा के स्तर पर महसूस न कर ले।

© 2026 schorbit.com. All rights reserved.

Prepared exclusively for Schorbit Students